पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था

www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

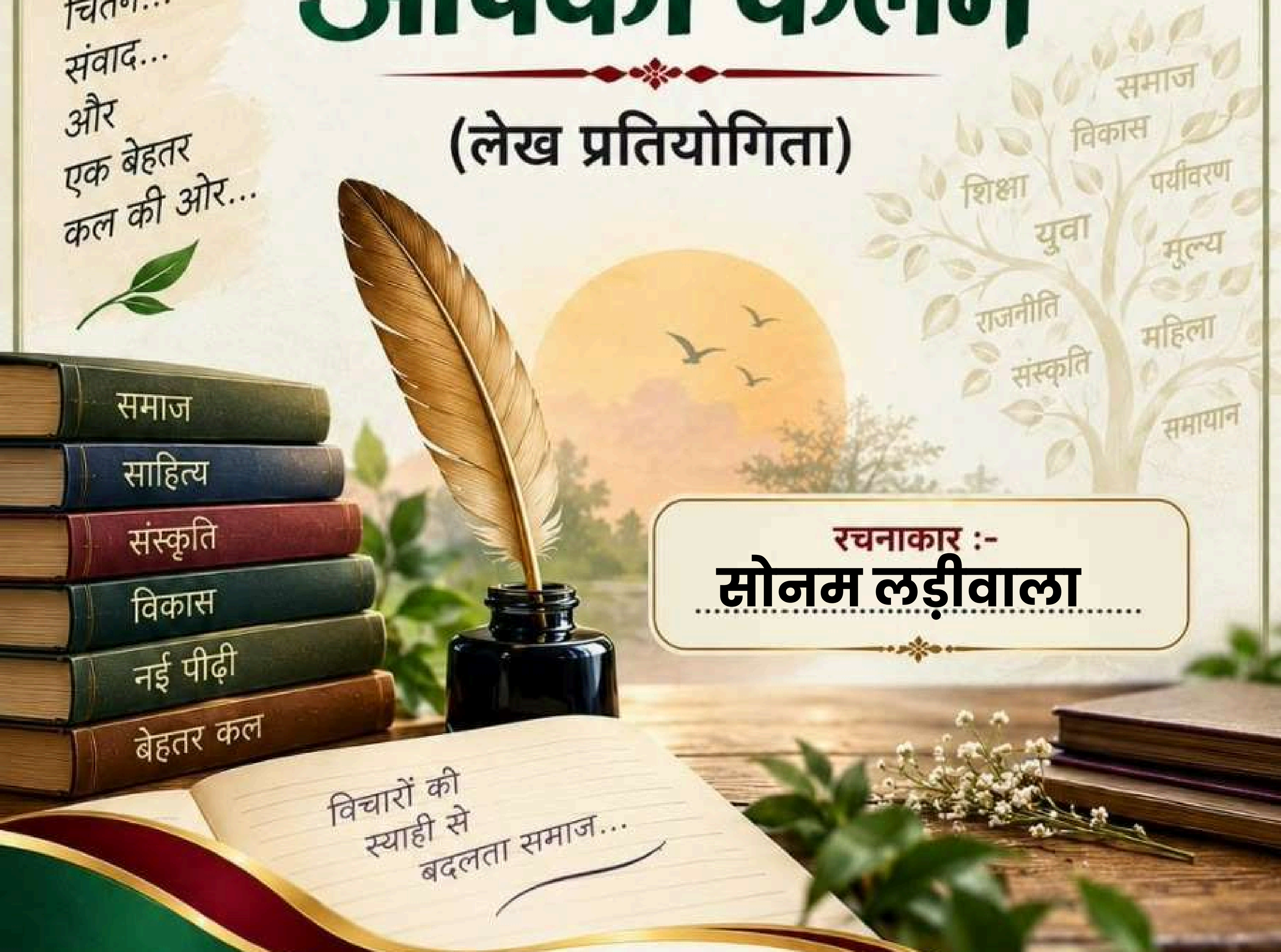

रचनाकार :-

सोनम लड़ीवाला

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक	:	डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक	:	Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय	:	15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क	:	9009423393
ईमेल	:	antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट	:	www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - **सोनम लड़ीवाला**

वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या क्या है?

वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या क्या है?

यह प्रश्न जितना सरल दिखाई देता है, उसका उत्तर उतना ही कठिन है। आज की दुनिया में समस्याओं की कोई कमी नहीं है। बेरोजगारी, महँगाई, आर्थिक और सामाजिक विषमता, बढ़ती प्रतिस्पर्धा, असंतोष, पर्यावरण संकट, तकनीक के बढ़ते प्रभाव से जुड़ी चुनौतियाँ और भविष्य को लेकर अनेक आशंकाएँ हैं। व्यक्तिगत जीवन में समय का अभाव, तनाव और बढ़ती अपेक्षाएँ हैं तो सामाजिक जीवन में संवाद और संवेदनशीलता का क्षय दिखाई देता है।

ऐसे समय में यदि पूछा जाए कि वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या क्या है, तो प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुभव और परिस्थिति के आधार पर अलग उत्तर दे सकता है। किसी के लिए बेरोजगारी सबसे बड़ी चिंता है, किसी के लिए महँगाई, किसी के लिए पर्यावरण संकट और किसी के लिए सामाजिक असमानता। इन सभी समस्याओं का अपना महत्व है। फिर भी प्रश्न यह है कि इन अनेक समस्याओं के पीछे वह मूल समस्या क्या है, जो बाकी समस्याओं को और जटिल बना रही है?

मेरे विचार से वर्तमान की सबसे बड़ी समस्या केवल समस्याओं का होना नहीं है। समस्याएँ मानव जीवन का स्वाभाविक हिस्सा हैं। व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र—हर स्तर पर समय के साथ नई चुनौतियाँ आती रही हैं। समस्या का होना असामान्य नहीं, लेकिन समस्या के सामने हमारी सोच और प्रतिक्रिया का कमजोर पड़ जाना निश्चित रूप से चिंता का विषय है।

जब हम किसी समस्या को समझने से पहले ही उसे असंभव मान लेते हैं, उसके कारणों को खोजने के बजाय दोषारोपण करने लगते हैं, समाधान की तलाश से अधिक शिकायत करने में ऊर्जा लगाने लगते हैं और कठिन परिस्थिति में अपने हिस्से की भूमिका को पहचानना छोड़ देते हैं, तब समस्या अपने वास्तविक आकार से कहीं अधिक बड़ी हो जाती है।

इसीलिए वर्तमान में यह देखना पर्याप्त नहीं कि हमारे सामने कितनी समस्याएँ हैं। हमें यह भी देखना होगा कि हम उन्हें किस दृष्टि से देखते हैं और उनके समाधान के लिए क्या करते हैं।

मनुष्य का जीवन चुनौतियों से भरा रहा है। कभी प्रकृति उसके सामने चुनौती बनकर खड़ी हुई, कभी बीमारी, अकाल, युद्ध, गरीबी और सामाजिक विषमता। मनुष्य ने हर युग में अपनी बुद्धि, श्रम और सामूहिक प्रयास से इन चुनौतियों का सामना किया है। यदि हर कठिनाई को अंतिम सत्य मान लिया जाता, तो मानव सभ्यता शायद इतनी दूर तक न पहुँच पाती।

समस्या और चुनौती में एक सूक्ष्म अंतर है। समस्या हमें रोकती है, चुनौती हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकती है। कठिनाई को चुनौती में बदलने के लिए परिस्थितियों से आँखें मूँदना नहीं, बल्कि उन्हें समझना आवश्यक है।

एक बंद दरवाजा दो लोगों के सामने हो तो एक व्यक्ति उसे अंत समझकर लौट सकता है और दूसरा आसपास देखकर किसी दूसरे रास्ते की तलाश कर सकता है। दरवाजा दोनों के लिए समान है, लेकिन उसे देखने की दृष्टि अलग है। इसी तरह किसी परिस्थिति को बदलना हमारे हाथ में न भी हो, उसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया को दिशा देना कई बार हमारे हाथ में होता है।

लेकिन हर समस्या केवल सोच बदलने से समाप्त नहीं हो जाती। बेरोजगारी, गरीबी, आर्थिक विषमता, सामाजिक अन्याय, प्राकृतिक आपदा या शिक्षा के अवसरों की कमी जैसी वास्तविक समस्याओं के पीछे जटिल सामाजिक, आर्थिक और नीतिगत कारण होते हैं। इसलिए सही दृष्टिकोण का अर्थ समस्या को छोटा करके देखना नहीं, बल्कि उसकी गंभीरता को स्वीकार करते हुए समाधान की संभावना तलाशना है।

इसलिए कठिन परिस्थिति में पहला प्रश्न होना चाहिए—“यह समस्या क्यों है?” और उसके बाद—“इस स्थिति में हमारे हाथ में क्या है?” यहीं से निष्क्रियता के स्थान पर प्रयास जन्म लेता है।

बेरोजगारी : व्यक्ति और व्यवस्था दोनों की चुनौती

वर्तमान समय की गंभीर समस्याओं में बेरोजगारी प्रमुख है। रोजगार केवल आय का साधन नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान, परिवार की सुरक्षा और भविष्य के विश्वास से भी जुड़ा है। योग्य व्यक्ति को रोजगार न मिलने पर उसका प्रभाव परिवार और समाज तक पहुँचता है।

बेरोजगारी के कई कारण हैं—रोजगार के अवसरों की कमी, शिक्षा और बाजार की आवश्यकताओं में अंतर, कौशल का अभाव, आर्थिक परिस्थितियाँ, क्षेत्रीय असमानता और तकनीकी परिवर्तन। इसलिए इसे केवल व्यक्ति की योग्यता या मेहनत की कमी मानना उचित नहीं।

बदलते समय में रोजगार के स्वरूप भी बदल रहे हैं। ऐसे में डिग्री के साथ आवश्यक कौशल विकसित करना और नए अवसरों की तलाश करना व्यक्ति के लिए जरूरी है। साथ ही सरकार को रोजगारोन्मुख नीतियों और कौशल-विकास पर ध्यान देना होगा, शिक्षा संस्थानों को उपयोगी प्रशिक्षण देना होगा और उद्योगों को अवसर उपलब्ध कराने होंगे।

अतः बेरोजगारी केवल व्यक्ति की समस्या नहीं, बल्कि व्यक्ति, समाज और व्यवस्था की साझा जिम्मेदारी और चुनौती है।

बढ़ती प्रतियोगिता

मनुष्य में आगे बढ़ने और स्वयं को बेहतर बनाने की इच्छा स्वाभाविक है। स्वस्थ प्रतियोगिता व्यक्ति को मेहनत करने, अपनी क्षमताएँ पहचानने और अपनी सीमाएँ पार करने की प्रेरणा दे सकती है।

समस्या तब शुरू होती है, जब प्रतियोगिता स्वयं को बेहतर बनाने के बजाय दूसरों से आगे निकलने की दौड़ बन जाती है। आज व्यक्ति अपनी सफलता को अपनी पिछली स्थिति से नहीं, बल्कि दूसरों के अंकों, नौकरी, धन और सुविधाओं से मापने लगता है। तुलना उसे अपनी उपलब्धियों से संतुष्ट नहीं होने देती और असंतोष व तनाव बढ़ा सकती है।

समस्या प्रतियोगिता में नहीं, उसकी मानसिकता में है। कल से बेहतर बनने का प्रयास विकास का माध्यम है, लेकिन अपनी सफलता को दूसरों से आगे होने पर निर्भर कर देना असुरक्षा पैदा कर सकता है। इसलिए आगे बढ़ना जरूरी है, पर अपनी दिशा और प्रगति का मूल्यांकन स्वयं से करना अधिक सार्थक है। दूसरों को पीछे छोड़ना सफलता का एकमात्र प्रमाण नहीं हो सकता।

बेहतर जीवन की चाह और बढ़ती अपेक्षाएँ

हर व्यक्ति अपने और अपने परिवार के लिए बेहतर जीवन चाहता है। अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षित घर और सुविधाओं की इच्छा स्वाभाविक है। विज्ञान और तकनीक ने जीवन को सरल बनाने के अनेक साधन दिए हैं।

समस्या तब पैदा होती है, जब सुविधा आवश्यकता से आगे बढ़कर अंतहीन इच्छा बन जाती है। जो कभी विलासिता थी, वह धीरे-धीरे आवश्यकता जैसी लगने लगती है। विज्ञापनों और आभासी माध्यमों से लगातार यह भाव पैदा हो सकता है कि हमारे जीवन में कुछ न कुछ कम है। व्यक्ति अपने पास मौजूद चीजों का मूल्य कम और दूसरों की सुविधाओं का मूल्य अधिक देखने लगता है।

बेहतर जीवन की चाह गलत नहीं, लेकिन उसे केवल अधिक वस्तुओं और सुविधाओं से जोड़ देना जीवन की परिभाषा को सीमित कर देता है। संतोष का अर्थ प्रगति छोड़ना नहीं, बल्कि अपनी आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को पहचानना है। सुविधाएँ जीवन को सरल बनाएँ, जीवन स्वयं सुविधाओं की प्राप्ति में न उलझ जाए—यही संतुलन आवश्यक है।

तकनीक : वरदान भी, चुनौती भी

तकनीक ने शिक्षा, चिकित्सा, संचार, व्यापार और दैनिक जीवन को काफी सरल बनाया है। जानकारी कुछ ही क्षणों में उपलब्ध हो जाती है और समय व श्रम की बचत होती है।

लेकिन जानकारी की अधिकता ज्ञान की गारंटी नहीं है। सही-गलत की पहचान कठिन हो सकती है और आभासी दुनिया में अधिक समय बिताने से वास्तविक संवाद व संबंधों के लिए समय कम हो सकता है। दूसरों के जीवन के चमकदार पक्ष से अपनी तुलना करना भी असंतोष को जन्म दे सकता है।

तकनीक स्वयं न अच्छी है, न बुरी; उसका प्रभाव उसके उपयोग पर निर्भर करता है। यदि वह शिक्षा, रचनात्मकता, संचार और सुविधा का माध्यम बने तो जीवन बेहतर कर सकती है, लेकिन बिना विवेक के उपयोग चुनौती बन सकता है।

इसलिए आवश्यकता तकनीक से दूर भागने की नहीं, बल्कि उसके साथ संतुलित और विवेकपूर्ण जीवन जीने की क्षमता विकसित करने की है।

पर्यावरण : सुविधा की कीमत

वर्तमान की गंभीर समस्याओं में पर्यावरण संकट प्रमुख है। वायु प्रदूषण, जल संकट, वनों की कमी, संसाधनों का अत्यधिक दोहन और बदलता पर्यावरण मानव जीवन के लिए चुनौती बन रहे हैं। इसके पीछे विकास की दिशा, औद्योगीकरण, शहरीकरण और हमारी सामूहिक जीवन-शैली जैसे अनेक कारण हैं, इसलिए समाधान भी सामूहिक प्रयास से ही संभव है।

व्यक्तिगत स्तर पर पानी और संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, कचरे के प्रति जिम्मेदारी और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता छोटे कदम लग सकते हैं, लेकिन सामूहिक परिवर्तन इन्हीं से शुरू होता है। हमें समझना होगा कि प्रकृति केवल उपयोग की वस्तु नहीं, बल्कि हमारे जीवन का आधार है।

विकास आवश्यक है, लेकिन ऐसा विकास नहीं जो आज की सुविधा के लिए आने वाले कल की कीमत वसूल करे।

सामाजिक संवेदनहीनता : दूसरे का दर्द कब अपना बनेगा?

समाज की वास्तविक स्थिति केवल आर्थिक आँकड़ों से नहीं, बल्कि इस बात से भी तय होती है कि लोग एक-दूसरे के दुख और कठिनाइयों के प्रति कितने संवेदनशील हैं। हम अपने आसपास गरीबी, वृद्धों की उपेक्षा, बच्चों की शिक्षा का अभाव या जरूरतमंदों की परेशानी देखते हैं, पर कई बार चर्चा और सहानुभूति तक ही सीमित रह जाते हैं।

समस्या तब गंभीर होती है, जब हर कठिनाई को केवल “दूसरे की समस्या” मान लिया जाता है। संवेदनशीलता का अर्थ हर समस्या की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेना नहीं, बल्कि जहाँ संभव हो, सहायता और समाधान का हिस्सा बनना है।

यदि किसी एक की कठिनाई को पूरे समाज की चिंता समझने का भाव विकसित हो, तो सामूहिक समाधान की शक्ति बढ़ेगी। हमें ज्ञानवान और सक्षम समाज के साथ मानवीय और संवेदनशील समाज भी बनना होगा।

आर्थिक और सामाजिक विषमता

आर्थिक और सामाजिक विषमता के कारण सभी लोगों को शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और विकास के समान अवसर नहीं मिलते। कई बार प्रतिभा संसाधनों के अभाव में आगे नहीं बढ़ पाती और व्यक्ति की क्षमता परिस्थितियों के पीछे छिप जाती है।

असमानता कम करने के लिए शिक्षा, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा और समान अवसर आवश्यक हैं। साथ ही समाज की सोच भी बदलनी होगी। किसी की कठिनाई को उसकी व्यक्तिगत असफलता मानने के बजाय उसके पीछे की परिस्थितियों को समझना होगा।

यदि हम असमानता को सामान्य मान लेंगे, तो परिवर्तन की आवश्यकता महसूस नहीं होगी। उसे सामाजिक समस्या मानकर ही समाधान की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

समस्या के लक्षण नहीं, कारण देखना

वर्तमान की अनेक समस्याएँ आपस में जुड़ी हैं। बेरोजगारी आर्थिक कठिनाई और असंतोष बढ़ा सकती है, प्रतियोगिता तुलना को और उपभोक्तावाद अपेक्षाओं को बढ़ा सकता है। तकनीक का असंतुलित उपयोग सामाजिक दूरी बढ़ा सकता है और संवेदनहीनता समस्याओं को जटिल बना सकती है।

इसलिए केवल समस्या के दिखाई देने वाले रूप से लड़ना पर्याप्त नहीं; उसके मूल कारण को समझना आवश्यक है। किसी विद्यार्थी के कम अंक या किसी व्यक्ति की बेरोजगारी को उसकी असफलता मानने से पहले उसकी परिस्थितियों, अवसरों और आवश्यकताओं को समझना होगा।

समाधान की दृष्टि पूछती है—“ऐसा क्यों हुआ?” और “इसे बदलने के लिए क्या किया जा सकता है?” इन्हीं प्रश्नों से समस्या से समाधान की यात्रा शुरू होती है।

शिकायत से जिम्मेदारी तक

समस्या के सामने शिकायत करना आसान है—व्यवस्था खराब है, लोग बदल गए हैं या अवसर कम हैं। इनमें कुछ बातें सही हो सकती हैं, लेकिन केवल शिकायत समाधान नहीं देती।

आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी भूमिका पहचानें और जहाँ संभव हो, परिवर्तन में योगदान दें। समस्या को केवल किसी और की जिम्मेदारी मानने के बजाय समाधान में अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करना ही बदलाव की पहली सीढ़ी है।

----- निष्कर्ष -----

बेरोजगारी, महँगाई, पर्यावरण संकट, विषमता, तकनीक का असंतुलित उपयोग और सामाजिक संवेदनहीनता—ये सभी गंभीर समस्याएँ हैं। लेकिन इनसे भी बड़ी चुनौती तब बन जाती है, जब हम समस्याओं को समझने के बजाय उनसे बचने लगते हैं, समाधान खोजने के बजाय केवल शिकायत करते हैं और अपनी भूमिका पहचानने के बजाय सारी जिम्मेदारी दूसरों पर डाल देते हैं।

समस्या का होना हमारे हाथ में हमेशा नहीं होता, लेकिन समस्या के प्रति हमारा दृष्टिकोण और उसके समाधान की दिशा में उठाया गया कदम बहुत कुछ बदल सकता है।

हमें समस्याओं से आँखें नहीं चुरानी हैं, उनके कारणों को समझना है; निराश होकर रुकना नहीं है, समाधान की संभावना तलाशनी है; और केवल यह नहीं पूछना है कि "कौन जिम्मेदार है?", बल्कि यह भी पूछना है—"मैं क्या कर सकता हूँ?"

क्योंकि किसी भी समस्या का अंत केवल उसके समाप्त हो जाने से नहीं होता, बल्कि तब शुरू होता है जब मनुष्य उसके सामने खड़े होकर कहता है—समस्या बड़ी है, लेकिन समाधान की संभावना उससे बड़ी हो सकती है।

----- सोनम लड़ीवाला

लेखक परिचय

नाम –सोनम लड़ीवाला

जयपुर (राजस्थान)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ........**सोनम लड़ीवाला**........जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...